# वाक्य विज्ञान

डॉ0 वन्दना श्रीवास्तव
एसो0 प्रो0 हिन्दी विभाग
श्री जे0एन0एम0पी0जी0कॉलेज
लखनऊ

# वाक्य विज्ञान का क्षेत्र

वाक्य विज्ञान में ऐसे नियमों का अध्ययन किया जाता है, जिनके आधार पर शब्दों से वाक्य रचना होती है। वाक्य विज्ञान के अन्तर्गत वाक्य संरचना के तत्वों अथवा घटकों के बीच परस्पर सम्बन्ध और उनके क्रम विन्यास के नियमों का अध्ययन किया जाता है।

# वाक्य की अवधारणा

वाक्य सम्बन्धी अध्ययनों में वाक्य के स्वरूप की पहचान, वर्गीकरण एवं प्रजनन सम्बन्धी समस्याओं पर विचार विमर्श किया जाता है। लिखित भाषा में इसकी सत्ता को पहचानना सरल होता है किन्तु मौखिक भाषा, जहाँ अनुतान एवं विराम वाक्य की सीमा से सम्बन्धित अनिश्चित संकेत देते हैं वहाँ यह कार्य कठिन होता है। इस दृष्टि से भाषा संरचना की सबसे बड़ी इकाई जिसमें अनुतान विद्यमान होता है 'वाक्य' कहलाती है।

# वाक्य की परिभाषा

- शब्दों का वह व्यवस्थित रूप जिसमें एक पूर्ण अर्थ की प्रतीति होती है, वाक्य कहलाता है।
- वह पद समूह जिससे श्रोता को वक्ता के अभिप्राय का बोध हो वाक्य कहलाता है।
- वाक्यं स्यात् योग्याताकांक्षासक्तियुक्तः पदोच्चयः – आचार्य विश्वनाथ (साहित्य दर्पण)

# वाक्य के तत्व

- सार्थकता
- योग्यता
- आकांक्षा
- निकटता या सन्निधि
- पदक्रम
- अन्वय

# वाक्य की विशेषतायें

- वाक्य उच्चारण खण्ड की सबसे बड़ी इकाई है।
- वाक्य सार्थक एवं स्वयं में सम्पूर्ण होता है।
- वाक्य में एक आधार तथा एक अनुतान होती है। अनुतान उच्चारण गुणों को बदल देती है।
- वाक्य की रचना पद से होती है। पद ही परसर्गों के साथ प्रयुक्त होकर वाक्य रचना करते हैं

# वाक्य के अंग

मुख्य रूप से वाक्य क दो अंग होते हैं –

- **उद्देश्य** – वाक्य में जिसके विषय में बताया जाता है उसे उद्देश्य कहते हैं। जैसे – राम खाता है। (राम–उद्देश्य)
- **विधेय** – वाक्य में उद्देश्य के विषय में जो कुछ कहा जाता है उसे विधेय कहते हैं। जैसे – राम खाता है। (खाता है – विधेय )

# वाक्य के प्रकार या भेद

## वर्गीकरण के आधार

1. पदक्रम
2. पदान्वयन
3. रचना
4. अर्थ
5. क्रिया प्रयोग सीन
6. आकृति

# 1. पदक्रम के आधार पर

पदक्रम के अनुसार **दो** प्रकार के वाक्य होते हैं –

- **स्वतंत्र पदक्रम वाले वाक्य–**जिनमें प्रयुक्त पदों का क्रम स्वतंत्र होता है अर्थात् कर्ता, कर्म, क्रिया का प्रयोग स्थान निश्चित नहीं होता। संस्कृत, लैटिन, ग्रीक आदि संयोगात्मक भाषाय इसका उदाहरण हैं। यथा– वृक्षात् फलम् पतति या पतति वृक्षात् फलम् या फलम् वृक्षात् पतति सभी के अर्थ समान हैं।
- **निश्चित पदक्रम वाले वाक्य–**जिनमें प्रयुक्त पदों का क्रम निश्चित होता है। क्रम भंग किसी भी दशा में नही किया जा सकता। हिन्दी, अंग्रेजी जैसी अयोगात्मक भाषायें इस श्रेणी में आती हैं।

# 2. पदान्वयन के आधार पर

पदान्वयन का अर्थ है वाक्य में प्रयुक्त पदों का व्याकरणिक कोटियों की दृष्टि से सह सम्बन्ध। नाम पदों व क्रिया पदों का लिंग, वचन, कारक, पुरुष, काल आदि दृष्टि से सह सम्बन्ध पदान्वय है। अंतः सम्बन्धित इकाइयों में से एक इकाई नियंत्रक होती है और दूसरी नियंत्रित। जैसे – लड़का जा रहा है। लड़की जा रही है। यहाँ संज्ञाएं नियंत्रक हैं।

# 3. रचना के आधार पर

रचना के आधार पर वाक्य तीन प्रकार के होते हैं

- **सरल वाक्य** –जिसमें एक उद्देश्य व एक विधेय होता है। जैसे– राम घर जाता है।
- **मिश्र वाक्य** –जिसमें एक प्रधान वाक्य तथा एक या एक से अधिक उपवाक्य होते हैं। जैसे – सैनिक ने कहा (प्रधान उपवाक्य) कि मैं शत्रुओं को परास्त कर दूँगा (सहायक उपवाक्य )।
- **संयुक्त वाक्य** –जिसमें एक प्रधान उपवाक्य तथा एक या एक से अधिक समानाधिकारी वाक्य होते हैं। जैसे – मैं घर आया और सो गया।

# 4. अर्थ के आधार पर

अर्थ के आधार पर वाक्य के **आठ** भेद होते हैं –

- **विधानवाचक** – यह मेरा घर है।
- **इच्छावाचक** – ईश्वर करे तुम सफल हो।
- **आज्ञावाचक** – तुम तुरन्त यहाँ से चले जाओ।
- **निषेधवाचक** – मैं आज नहीं जाऊँगा।
- **प्रश्नवाचक** – आपका नाम क्या है।
- **संकेतवाचक** – यदि तुम परिश्रम करोगे तो अवश्य सफल होगे।
- **संदेहवाचक** – संभवतः मैं आज न आ सकूँ।
- **विस्मयादिबोधक** – ओह! कितनी ठंड है।

# 5. क्रिया प्रयोग के आधार पर

क्रिया प्रयोग की दृष्टि से वाक्य **दो** प्रकार के होते हैं –

- **क्रिया मुख वाक्य –** जिनमें क्रिया का प्रयोग कर्ता से पहले होता है। जैसे – चलना ही होगा तुम्हे मेरे साथ।

- **क्रिया पश्च वाक्य –** जिनमें कर्ता के बाद क्रिया का प्रय ोग होता है। जैसे – धावक दौड़ता है।

# 6. आकृति के आधार पर

विश्वभाषाओं में आकृति के आधार पर दो प्रकार के वाक्य मिलते हैं

- **संयोगात्मक** – जिनमें सम्बन्ध तत्व अर्थ तत्व में ही जुड़े होते हैं। जैसे – संस्कृत
- **अयोगात्मक** – जिनमें अर्थ तत्व के साथ सम्बन्ध तत्व पृथक लिखे जाते हैं। जैसे– अंग्रेजी, हिन्दी, चीनी
- **श्लिष्ट** – जिनमें सम्बन्ध तत्व जुड़ने पर अर्थ तत्व में विकार तो उत्पन्न होता है किन्तु सम्बन्ध तत्व की झलक अलग दिखाई देती है। जैसे – ऐतिहासिक, पौराणिक, नैतिक

# सन्दर्भ ग्रन्थ


- आधुनिक भाषा विज्ञान – डॉ0 भोलानाथ तिवारी
- आधुनिक भाषा विज्ञान के सिद्धान्त – राम किश ाोर शर्मा
- हिन्दी भाषा एवं भाषा विज्ञान विविध आयाम – डॉ0 शेफाली चतुर्वेदी

# धन्यवाद